IX Class Hindi First Language

Government of Telangana

Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation

When abused in or out of school.

To save the children from dangers and problems.

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY 24 HOUR NATIONAL HELPLINE

When the children are denied school and compelled to work.

When the family members or relatives misbehave.

1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

उमंग-1

IX Class Hindi First Language

कक्षा -9

FREE

हिंदी प्रथम भाषा

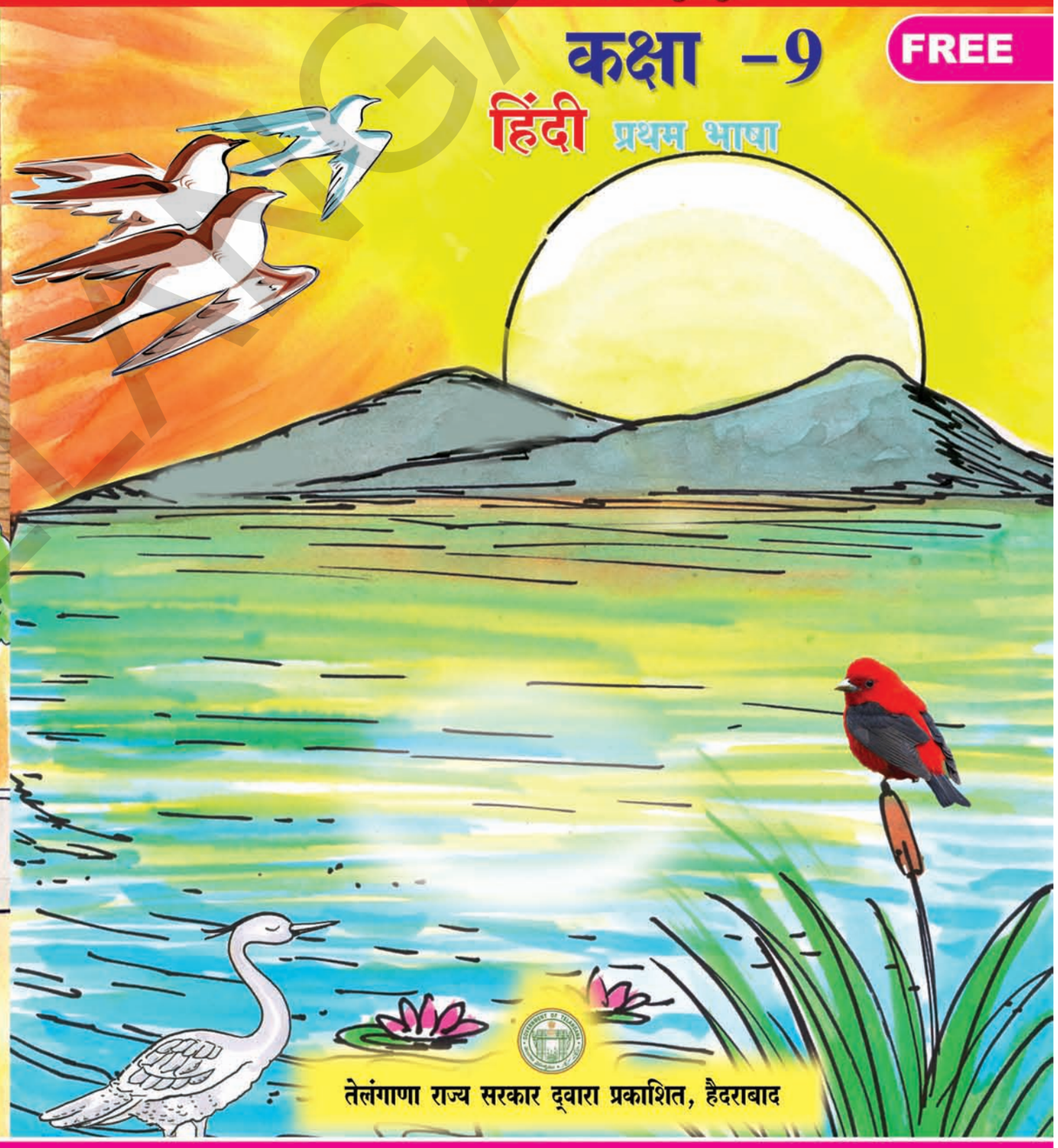

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

SCERT

बच्चो! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* पाठ के अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। इनके अतिरिक्त 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण दिया गया है। इसके माध्यम से आपको सबसे पहले संज्ञा शब्दों, तत्पश्चात क्रिया शब्दों और सोच-विचार के वाक्यों द्वारा चर्चा करनी चाहिए।
* हर पाठ में 'अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें 'सुनो-बोलो' और 'पढ़ो' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार के देने चाहिए। पढ़ो प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। इसका उद्देश्य आपमें पढ़ना व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे आपकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें 'लिखो', 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' और 'प्रशंसा' के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए।
* हर पाठ में 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें शब्द-भंडार व व्याकरणांश के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे आपको व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य—भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

TELANGANA SCERT TEXT

उमंग - 1

कक्षा - 9 हिंदी (प्रथम भाषा)

Class-IX Hindi (First Language)

संपादक

प्रो. टी.वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली
सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

सलाहकार

श्री सुवर्ण विनायक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त भाषाविद,
भारतीय भाषा आधार पत्र संपादक,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, हैदराबाद, तेलंगाणा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस. याडारम, मेड्चल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्री ए. सत्यनारायण रेड्डी
निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विभाग,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

श्री बी. सुधाकर
निदेशक,
सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस,
तेलंगाणा, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से बढ़ें।
विनय से रहें।

क़ानून का आदर करें।
अधिकार प्राप्त करें।

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana State, Hyderabad.

First Published 2013

New Impressions 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana State.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by T.S. Government 2020-21

Printed in India
at Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana

— o —

SCERT TELANGANA

आमुख

बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इसके साथ ही एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई-2009, ए.पी.एस.सी.एफ-2011 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यपुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सुझाती है कि बच्चों को बाहरी जीवन से जोड़ा जाए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने के प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएगा।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह और समय की आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों को अनदेखा करने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सृजन और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनःनिर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री तथा सुवर्ण विनायक और पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसाइटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है। एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस पाठ्यपुस्तक के विकास में अनेक विद्वतजनों का सहयोग प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्राप्त हुआ है। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इस पाठ्यपुस्तक में जिन लेखकों और कवियों की रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं, उनके एवं उनके प्रकाशकों के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता में सुधार हेतु राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद आपके सुझावों का स्वागत करेगी।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा राज्य सरकार

SCERT TELANGANA

शिक्षकों से...

- यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर तैयार की गई है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। यह भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है।
- पाठ्यक्रम के चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। इसके लिए भाषा-शिक्षण की प्रचलित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, बाज़ार, इतिहास इत्यादि के प्रति विद्यार्थी को जिज्ञासु बनाने का प्रयास किया गया है, क्योंकि भाषा की भूमिका सर्वत्र है।
- हिंदी में अनेक बोली-भाषा और क्षेत्रीय प्रभावों का समावेश है। ये भाषा संसार के पोषक अंग हैं और धरोहर भी। इसलिए पाठों में आंचलिक पहचान के साथ लोक प्रचलित शब्द, मुहावरे, क्षेत्रीय परिवेश आदि का चित्रण है।
- पाठ्यपुस्तक के सोलह पाठों में विविध विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। इनके अतिरिक्त केवल पढ़ने के लिए दी गई पठन सामग्री का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक की सर्वांग आपूर्ति करना है।
- नवीं के विद्यार्थियों की भाषा और विचार-बोध का एक पूर्व आधार तैयार हो चुका है। अब उनके भाषिक दायरे और वैचारिक समृद्धि को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे हिंदी भाषा और साहित्य की पढ़ाई कर सकें। वे भाषिक रूप से इतने दक्ष हो जाएँ कि हिंदी उनके विमर्श और ज्ञान-विज्ञान की भाषा बन सके।
- इस पाठ्यपुस्तक में मुद्रण एवं टंकण की दृष्टि से विविध प्रकार की प्रचलित पद्धतियों का प्रयोग किया गया है ताकि छात्र इनसे भी अवगत हो सकें।
- सृजनात्मक साहित्य हमारी भाषिक दक्षता को पुख्ता बनाता है और संवेदनशीलता को परिष्कृत करता है। साथ ही वह सौंदर्य-बोध को भी समृद्ध करता है। इसीलिए एक ऐसी पाठ्यपुस्तक बनाने की ज़रूरत महसूस की गई जिसकी पाठ्य सामग्री में विषयगत विविधता हो, नवीनता हो और वह स्तर के अनुकूल भी हो।
- इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी साहित्य की समृद्ध परंपरा की पहचान के लिए मध्यकालीन कविता का आस्वाद लें और आज के जीवन को जानने के लिए आधुनिक कविता का भी बोध प्राप्त करें। भक्तिकाल की व्यापक जनचेतना को वे कबीर और वृंद की कविता के माध्यम से जानें और भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप से परिचित होने के लिए ललद्यद को भी पढ़ें। स्वतंत्रता आंदोलन, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा को महत्व देने के लिए पुस्तक में हिंदी कविता के विभिन्न कालों का प्रतिनिधित्व करने वाले कवियों की कविताएँ रखी गई हैं।
- इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि उन रचनाओं से बहुलवादी और धर्म-निरपेक्ष समाज का रूप भी सामने आए। हम साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कर सकें। भारतीय समाज के बहुभाषिक परिवेश को भी ध्यान में रखा गया है।
- इस पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है उसका नया प्रस्तुतीकरण। यह नया प्रस्तुतीकरण प्रश्न-अभ्यासों के माध्यम से किया गया है। पाठ्यपुस्तक में रचनाएँ एक वातावरण निर्मित करती हैं और प्रश्न-अभ्यास उन रचनाओं को परखने और पाठ से गहराई से जुड़ने का मौका देते हैं। वे विद्यार्थियों को स्वतंत्र और मौलिक रूप से सोचने की प्रेरणा भी देते हैं, इसलिए इस पुस्तक में संदर्भ को फैलाने वाले, कल्पना को विस्तार देने

SCERT TELANGANA

वाले और वैज्ञानिक तत्परता विकसित करने वाले प्रश्न पूछे गए हैं। बोध-प्रश्नों को सिलसिलेवार तरीके से पूछने की परिपाटी को तोड़ने का प्रयास किया गया है।

- अभ्यास के प्रथम चरण का शीर्षक **अर्थग्राह्यता-अभिव्यक्ति** है। इसके अंतर्गत दो बिंदु हैं- **विचार-विमर्श** तथा **पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार। विचार-विमर्श** के अंतर्गत आने वाले प्रश्नों का उद्देश्य बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना है। यह अभिव्यक्ति बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। अतः इस कौशल के अभ्यास में पाठ के संदर्भों पर बालक को विविध दृष्टिकोणों से सोचने और अपनी बात कहने का मौका मिले। **पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार** के अंतर्गत तीन चरण हैं जिनमें क्रमशः 'पाठ को पढ़ने के लिए प्रेरित करना', 'पाठ का भाव समझने के लिए अभ्यास करवाना' तथा 'पढ़ी हुई सामग्री का भाव विस्तार करने की योग्यता का विकास' का उद्देश्य शामिल है।
- **अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता-** इसके अंतर्गत कुल तीन स्तंभ हैं- **स्वाभिव्यक्ति, सृजनात्मक कार्य एवं प्रशंसा। स्वाभिव्यक्ति** में विद्यार्थियों की लिखित अभिव्यक्ति के विकास पर ध्यान दिया गया है। यह बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। इसमें उनके स्वलेखन की झलक हो। **सृजनात्मक कार्य** को भाषा कौशल का चरम विकास माना जा सकता है। बच्चों में कल्पनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न दक्षताएँ निहित होती हैं। उन्हें अपने विचार मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे अपनी खुद की कहानियाँ, गीत, संवाद, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचनाएँ, विज्ञापन, नाटक आदि का सृजन कर सकें। पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, चर्चा, भाषण आदि बच्चों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को इंगित करते हैं। **प्रशंसा** के अंतर्गत इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सके। ज्ञान के सटीक व संदर्भोचित सामाजिक उपयोग करने की योग्यता उत्पन्न करना इस कौशल का उद्देश्य है। वह प्राप्त ज्ञान के महत्व को समझते हुए उस ज्ञान के प्रति प्रशंसा का भाव रख सके।
- **भाषा की बात** का उद्देश्य छात्रों को भाषा संबंधी नियमों के बारे में जानकारी देते हुए उनमें भाषिक संरचना की समझ का विकास करना है। साथ ही साथ शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का विविध संदर्भों में प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना भी है।
- विद्यार्थियों की अर्थबोध संबंधी कठिनाई के निवारण हेतु पाठ्यपुस्तक के अंत में शब्द-संपदा दी गई है। इसमें शब्दों के अर्थ पाठ में आए संदर्भानुसार दिये गये हैं।
- सभी बच्चों की सहभागिता का विशेष महत्व है। छात्रों की विविधता को ध्यान में रखते हुए उन्हें सहभागिता के अवसर मुहैया कराएँ। बच्चों को विविध संदर्भों के विषय में बातचीत के अवसर दें। उनसे प्रश्न पूछें। उन्हें भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों ही प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग करें जिससे छात्रों में सहभागिता एवं सहयोग की भावना का विकास हो।
- प्रस्तावना प्रसंग का शिक्षण में विशेष महत्व है। ये प्रत्येक पाठ के आरंभ में हैं। प्रस्तावना प्रसंग के प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करवाते हुए पाठ के शिक्षण का आरंभ करें। ये क्रियाकलाप मौखिक होने चाहिए।
- प्रत्येक पाठ में परियोजना है। इसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार करना है।

शिक्षकों से आशा है कि वे पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करेंगे और आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे। परिषद पुस्तक के परिष्कार हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत करेगी।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।

परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन हैं हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

SCERT TELANGANA

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, हैदराबाद

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस याडारम, मेड्चल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा

डॉ. दुर्गेश नंदिनी
जी.जी.एच.एस. सुल्तान बाज़ार,
हैदराबाद, तेलंगाणा

शेख़ हाजी नूरानी
ज़ेड.पी.एच.एस. चिट्याल,
वरंगल, तेलंगाणा

बी. जयप्रकाश जोसफ
ज़ेड.पी.एच.एस. गरुगुबिल्ली,
विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
पाठशाला सहायक हिंदी, एस.आर.जी,
जी.एच.एस. (जूनियर कॉलेज),
भुवनगिरि, नलगोंडा

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस.फॉर डेफ एंड डम, मलकपेट, हैदराबाद

श्रीमती जयश्री लोहारेकर
जी.एच.एस. काचीगुड़ा,
हैदराबाद

चित्रांकन

श्री कुर्रेल्ला राघवाचारी
जेड.पी.एच.एस. नकरेकल, नलगोंडा

ले आउट & डिज़ाइन - श्री कुर्रा सुरेश बाबू एम.ए., एम.फिल., बी.टेक.

SCERT TELANGANA

विषय सूची

इकाई	क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	माह	पृष्ठ सं.
I.	1.	कबीर	कविता	जून	1
	2.	वह आवाज़	कहानी	जून	6
	3.	वृंद	कविता	जुलाई	13
	4.	तुम कब जाओगे, अतिथि!	कहानी	जुलाई	17
	उपवाचक	इस जल प्रलय में	संस्मरण	जुलाई	23
II.	5.	ललद्यद	कविता	अगस्त	29
	6.	दो बैलों की कथा	कहानी	अगस्त	34
	7.	कैदी और कोकिला	कविता	सितंबर	49
	8.	नाना साहब की पुत्री	रिपोर्ताज	सितंबर	56
	उपवाचक	रीढ़ की हड्डी	एकांकी	सितंबर	63
III.	9.	ग्रामश्री	कविता	अक्तूबर	73
	10	साँवले सपनों की याद	संस्मरण	नवंबर	79
	11.	एक कुत्ता और एक मैना	निबंध	नवंबर	86
	12	उपभोक्तावाद की संस्कृति	निबंध	नवंबर	94
	उपवाचक	माटीवाली	कहानी	दिसंबर	100
IV.	13	खुशबू रचते हैं हाथ	कविता	दिसंबर	103
	14	ल्हासा की ओर	यात्रा-वृत्तांत	जनवरी	108
	15	बच्चे काम पर जा रहे हैं	कविता	जनवरी	116
	16	मेरे बचपन के दिन	संस्मरण	फरवरी	121
	उपवाचक	अनोखा उपाय	कहानी	फरवरी	128
		शब्द संपदा			131

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इस पाठ्यपुस्तक द्वारा अपेक्षित दक्षताएँ

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, आत्मकथा आदि में कही गई बातें अपने शब्दों में बता सकेंगे। उनके बारे में चर्चा कर सकेंगे।
- ज्ञात विषय के बारे में चर्चा कर सकेंगे। उसके पक्ष-विपक्ष में अपना मत रख सकेंगे।
- संदर्भानुसार बातचीत कर सकेंगे। अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- अपने स्तर की कविता, कहानी, संवाद, निबंध, पत्र-लेखन, डायरी, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि का उचित आरोहावरोह के साथ सस्वर वाचन कर सकेंगे। साथ ही साथ मौनवाचन करने में भी सक्षम होंगे।
- पढ़ी हुई सामग्री का भाव समझ सकेंगे, भाव स्पष्ट कर सकेंगे और समान भाव की अपठित सामग्री से तुलना कर सकेंगे।
- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकालय की पुस्तकें आदि पढ़ने में रुचि लेंगे।

2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

- ज्ञात विषय के बारे में अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से लिख सकेंगे।
- पढ़े व सुने हुए विषय (पद्य व गद्य) का सार लिख सकेंगे। इसका विस्तार व व्याख्या लिख सकेंगे।
- अपने लेखन में विराम-चिह्नों का समुचित प्रयोग कर सकेंगे।
- बिना किसी वर्तनी दोष के अपने विचार लिख सकेंगे।
- स्वबोध, आध्यात्मिकता, नीति, आत्मविश्लेषण, जीवप्रेम, स्वतंत्रता, देशप्रेम, ग्रामीणता, जीवन कौशल, सामाजिकता, कर्मठता, श्रमिक महत्व, यात्रा, सद्भाव आदि का सामाजिक एवं नैतिक महत्व समझ सकेंगे। अर्जित ज्ञान का महत्व समझते हुए उसके प्रति प्रशंसा का भाव रख सकेंगे।
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, आत्मकथा, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, सूक्ति वाक्य आदि रचने का प्रयास कर सकेंगे।
- कविताओं का गायन, भाषण, पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, साक्षात्कार आदि क्रियाकलाप कर सकेंगे।

3. भाषा की बात

- परिचित शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का संदर्भोचित प्रयोग कर सकेंगे।
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का अर्थ समझ सकेंगे।
- विशेषण-विशेष्य, शब्द भेद, शब्द के रूप परिवर्तन, कारक विभक्तियाँ, शब्द शक्तियाँ, मुहावरे, प्रयोजन विशेष से बनने वाले शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, सामासिक शब्द आदि भाषिक तत्वों के प्रयोग समझ सकेंगे।

4. परियोजना कार्य

- अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार कर सकेंगे।
- विविध स्रोतों से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। प्राप्त ज्ञान को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।

SCERT TELANGANA